

भारतीय युवाओं की बदलती जीवन शैली का पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन

Dr. Renu Kureel

Associate professor department of Sociology

S.N.Sen B.V.P.G. College, Kanpur

सारांश

भारतीय समाज में परिवार लंबे समय से सामाजिक जीवन की प्रमुख संस्था रहा है। परिवार के माध्यम से व्यक्ति को सहयोग, जिम्मेदारी, अनुशासन, परंपरा, बड़ों के सम्मान और सामूहिक जीवन के मूल्य मिलते हैं। पिछले एक दशक में भारतीय युवाओं की जीवन शैली में तेजी से बदलाव आया है। इंटरनेट और स्मार्टफोन का विस्तार, उच्च शिक्षा में बढ़ती भागीदारी, शहरी रोजगार, उपभोक्ता संस्कृति, सोशल मीडिया, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लैंगिक समानता के विचारों ने युवाओं के दैनिक जीवन और निर्णयों को प्रभावित किया है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य इन परिवर्तनों का पारिवारिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है और द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। पिछले दस वर्षों के रुझान दिखाने के लिए इंटरनेट उपयोग तथा उच्च शिक्षा के सकल नामांकन अनुपात से संबंधित आँकड़ों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक मूल्य समाप्त नहीं हो रहे, बल्कि उनका स्वरूप बदल रहा है। आज का युवा परिवार से भावनात्मक जुड़ाव बनाए रखते हुए शिक्षा, रोजगार, विवाह और निजी जीवन में अधिक स्वतंत्रता चाहता है। इससे पीढ़ियों के बीच संवाद की आवश्यकता और बढ़ गई है।

मुख्य शब्द

युवा, जीवन शैली, परिवार, पारिवारिक मूल्य, डिजिटल संस्कृति, उच्च शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन

प्रस्तावना

भारतीय समाज में परिवार केवल साथ रहने की व्यवस्था नहीं है, बल्कि सामाजिककरण की मूल इकाई है। बच्चा परिवार में भाषा, व्यवहार, रिश्तों की समझ, नैतिकता, परंपरा, सहयोग और जिम्मेदारी सीखता है। लंबे समय तक संयुक्त परिवार, सामूहिक निर्णय, बड़ों की आज्ञा, विवाह में परिवार की प्रमुख भूमिका और स्पष्ट लैंगिक कार्य-विभाजन को सामान्य पारिवारिक व्यवस्था माना जाता रहा। आर्थिक विकास, शिक्षा और नगरीकरण ने इन

व्यवस्थाओं को पहले भी बदला, परंतु पिछले दस वर्षों में डिजिटल तकनीक ने परिवर्तन की गति को बहुत तेज कर दिया है।

युवाओं की जीवन शैली में अब शिक्षा, करियर, व्यक्तिगत पहचान, ऑनलाइन संपर्क, मनोरंजन, यात्रा, फैशन, स्वास्थ्य, फिटनेस और डिजिटल उपभोग महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। युवा अपने भविष्य के बारे में जानकारी इंटरनेट से लेते हैं, नौकरी के लिए स्थान बदलते हैं और विवाह या करियर जैसे निर्णयों में अपनी पसंद को अधिक महत्व देते हैं। युवतियों की शिक्षा और आर्थिक भागीदारी बढ़ने से परिवार में उनकी भूमिका भी बदल रही है। इन परिवर्तनों का अर्थ यह नहीं है कि युवा परिवार से दूर हो रहे हैं। अनेक मामलों में वे माता-पिता से भावनात्मक रूप से जुड़े रहते हैं, लेकिन वे संबंधों को आदेश और आज्ञापालन के बजाय संवाद और पारस्परिक सम्मान पर आधारित देखना चाहते हैं।

भारत की जनसंख्या संरचना में युवाओं का हिस्सा लंबे समय से बढ़ा रहा है। इसलिए युवाओं की जीवन शैली में होने वाला परिवर्तन केवल व्यक्तिगत व्यवहार का विषय नहीं, बल्कि परिवार, विवाह, लैंगिक संबंधों और सामाजिक मूल्यों में व्यापक बदलाव का संकेत है। इस शोध-पत्र में पिछले दस वर्षों के दो प्रमुख संकेतकों— इंटरनेट उपयोग और उच्च शिक्षा में भागीदारी—के आधार पर जीवन शैली के परिवर्तन को समझने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन की समस्या

आधुनिक भारतीय युवा परंपरा और आधुनिकता दोनों के बीच जीवन जीता है। परिवार उससे जिम्मेदारी, सम्मान और सामूहिकता बनाए रखने की अपेक्षा करता है, जबकि शिक्षा, रोजगार और डिजिटल संस्कृति उसे स्वतंत्र सोच, निजता और व्यक्तिगत चुनाव की ओर ले जाती है। इस स्थिति में कई बार परिवार के भीतर पीढ़ीगत मतभेद, विवाह संबंधी विवाद, करियर की पसंद, पहनावे, मित्रता, सोशल मीडिया और रहने की शैली को लेकर तनाव पैदा होता है। मुख्य समस्या यह समझना है कि बदलती जीवन शैली वास्तव में पारिवारिक मूल्यों को कमजोर कर रही है या उन्हें नए रूप में पुनर्गठित कर रही है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय युवाओं की जीवन शैली में पिछले दस वर्षों के प्रमुख परिवर्तनों की पहचान करना।
2. डिजिटल पहुँच और उच्च शिक्षा में वृद्धि के सामाजिक प्रभावों को समझना।
3. विवाह, लैंगिक भूमिकाओं, पीढ़ीगत संबंधों और पारिवारिक निर्णयों में आए बदलावों का विश्लेषण करना।

4. बदलती जीवन शैली के सकारात्मक और नकारात्मक पारिवारिक प्रभावों को स्पष्ट करना।
5. आधुनिक जीवन और पारिवारिक जिम्मेदारी के बीच संतुलन के लिए व्यावहारिक सुझाव देना।

शोध पद्धति

शोध पद्धति

यह अध्ययन **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति** पर आधारित है। इसमें भारतीय युवाओं की बदलती जीवन शैली और पारिवारिक मूल्यों में हो रहे परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है। शोध के लिए **द्वितीयक आँकड़ों** का उपयोग किया गया है, जिन्हें सरकारी रिपोर्टों, राष्ट्रीय सर्वेक्षणों, उच्च शिक्षा संबंधी दस्तावेजों, दूरसंचार एवं इंटरनेट उपयोग से संबंधित आधिकारिक आँकड़ों तथा समाजशास्त्रीय साहित्य से प्राप्त किया गया है। अध्ययन में इंटरनेट उपयोग, उच्च शिक्षा में भागीदारी, सामाजिक परिवर्तन, पारिवारिक संरचना, विवाह संबंधी प्रवृत्तियों, लैंगिक भूमिकाओं और पीढ़ीगत संबंधों जैसे संकेतकों के आधार पर युवाओं की बदलती जीवन शैली का विश्लेषण किया गया है। शोध में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के विश्लेषणों का प्रयोग किया गया है, जिसमें सांख्यिकीय आँकड़ों के माध्यम से सामाजिक प्रवृत्तियों को समझने का प्रयास किया गया है तथा गुणात्मक विश्लेषण द्वारा पारिवारिक मूल्यों, सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक परिवर्तनों की व्याख्या की गई है। इस अध्ययन का उद्देश्य बदलती जीवन शैली और पारिवारिक मूल्यों के बीच संबंधों को समझना तथा यह स्पष्ट करना है कि आधुनिक परिवर्तन पारिवारिक मूल्यों के समाप्त होने के बजाय उनके स्वरूप में किस प्रकार बदलाव ला रहे हैं।

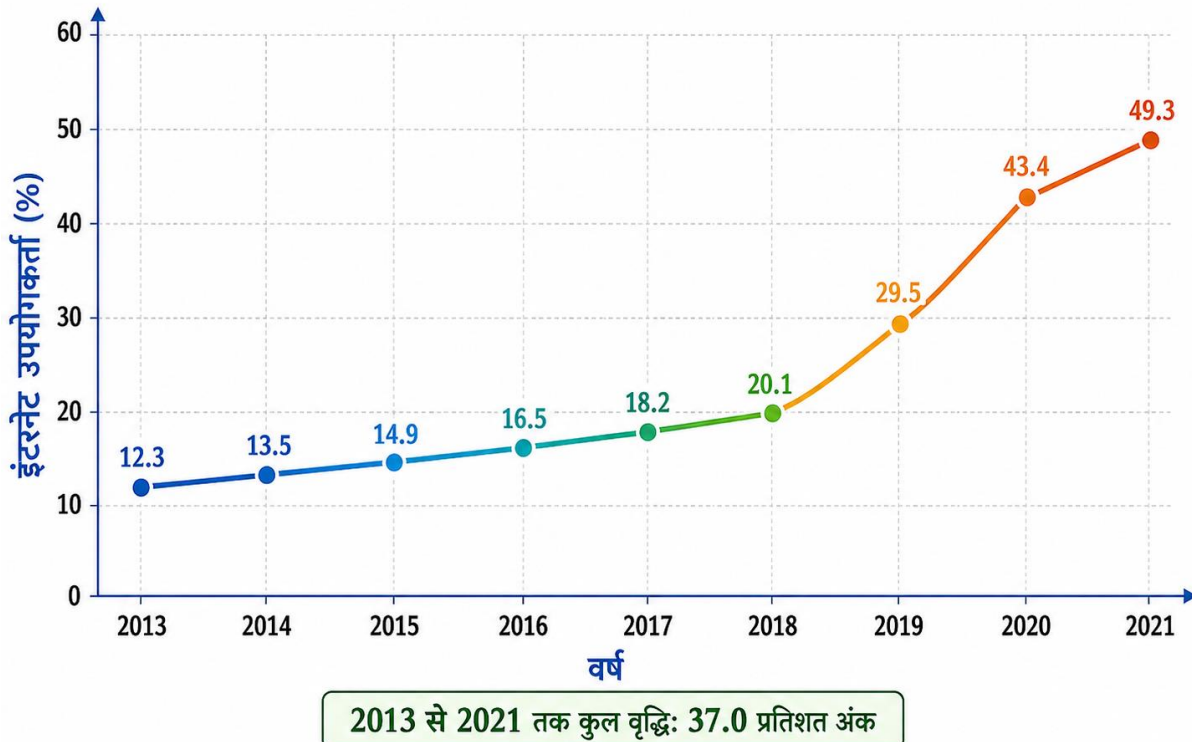
पिछले दस वर्षों के आँकड़ों का विश्लेषण

डिजिटल पहुँच भारतीय युवाओं की बदलती जीवन शैली का एक प्रमुख संकेतक है। इंटरनेट के विस्तार ने युवाओं के सूचना प्राप्त करने, शिक्षा, मनोरंजन, बैंकिंग, खरीदारी, सामाजिक संपर्क और रोजगार खोजने के तरीकों में व्यापक परिवर्तन किया है। तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के दौरान भारत में इंटरनेट उपयोग करने वाली जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई। इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में वृद्धि ने युवाओं के सामाजिक व्यवहार, संचार शैली और पारिवारिक संबंधों को भी प्रभावित किया है। डिजिटल माध्यमों के बढ़ते उपयोग के कारण युवा शिक्षा, करियर और व्यक्तिगत निर्णयों के लिए पहले की तुलना में अधिक स्वतंत्र सूचना स्रोतों तक पहुँच प्राप्त कर रहे हैं। इसके साथ ही परिवारों में डिजिटल संवाद, ऑनलाइन गतिविधियों और स्क्रीन आधारित जीवन शैली का महत्व भी बढ़ा है।

तालिका 1: भारत में इंटरनेट उपयोग करने वाली जनसंख्या, 2013–2021

वर्ष	इंटरनेट उपयोग करने वाली जनसंख्या (%)	2013 से वृद्धि (प्रतिशत अंक)
2013	12.3	0.0
2014	13.5	1.2
2015	14.9	2.6
2016	16.5	4.2
2017	18.2	5.9
2018	20.1	7.8
2019	29.5	17.2
2020	43.4	31.1
2021	49.3	37.0

स्रोत: विश्व विकास संकेतक (World Development Indicators); मूल स्रोत—अंतरराष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU) का विश्व दूरसंचार/ICT संकेतक डेटाबेस।

ग्राफ 1: भारत में इंटरनेट उपयोग करने वाली जनसंख्या (2013-2021)

स्त्रोत: विश्व विकास संकेतक (World Development Indicators); मूल स्त्रोत: ITU डेटाबेस

विश्लेषण

तालिका से स्पष्ट है कि 2013 से 2021 के बीच भारत में इंटरनेट उपयोग करने वाली जनसंख्या 12.3 प्रतिशत से बढ़कर 49.3 प्रतिशत हो गई। इस अवधि में कुल 37 प्रतिशत अंक की वृद्धि दर्ज की गई। विशेष रूप से 2019 के बाद इंटरनेट उपयोग में तेज वृद्धि दिखाई देती है। डिजिटल सेवाओं, स्मार्टफोन की उपलब्धता और ऑनलाइन शिक्षा, कार्य एवं संचार के विस्तार ने युवाओं के जीवन में डिजिटल माध्यमों की भूमिका को महत्वपूर्ण बना दिया।

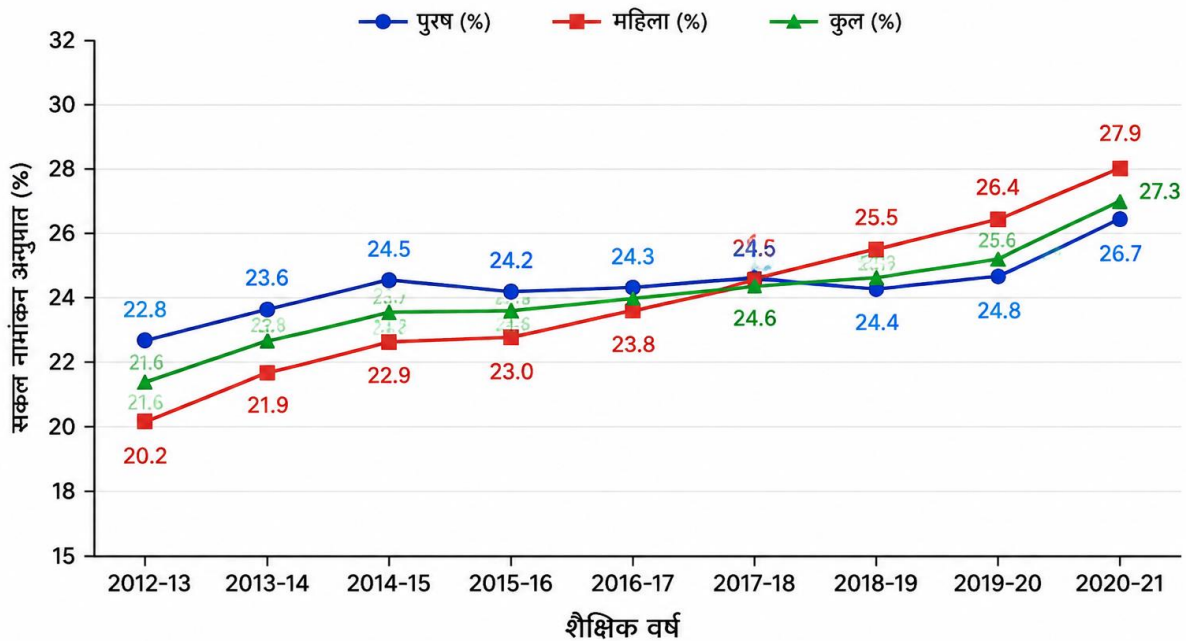
इंटरनेट के बढ़ते उपयोग ने पारिवारिक जीवन को भी प्रभावित किया है। एक ओर डिजिटल माध्यमों ने दूर रहने वाले परिवारों को जुड़े रहने, शिक्षा और रोजगार संबंधी अवसरों तक पहुँच बनाने में सहायता की है। दूसरी ओर अत्यधिक डिजिटल निर्भरता ने परिवार के सदस्यों के बीच प्रत्यक्ष संवाद, साथ बिताए जाने वाले समय और पारंपरिक सामाजिक संपर्कों को प्रभावित किया है। इस प्रकार डिजिटल परिवर्तन ने पारिवारिक संबंधों को समाप्त नहीं किया, बल्कि उनके स्वरूप में परिवर्तन उत्पन्न किया है।

तालिका 2: उच्च शिक्षा का सकल नामांकन अनुपात (GER), 2012-13 से 2020-21 तक

शैक्षणिक वर्ष	पुरुष (%)	महिला (%)	कुल (%)
2012-13	22.8	20.2	21.6
2013-14	23.6	21.9	22.8
2014-15	24.5	22.9	23.7
2015-16	24.2	23.0	23.7
2016-17	24.3	23.8	24.1
2017-18	24.5	24.6	24.6
2018-19	24.4	25.5	24.9
2019-20	24.8	26.4	25.6
2020-21	26.7	27.9	27.3

स्रोत: भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) की समय-श्रृंखला रिपोर्ट।

ग्राफ 2: उच्च शिक्षा का सकल नामांकन अनुपात (GER), 2012-13 से 2020-21 तक



स्रोत: भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) की समय-श्रृंखला रिपोर्ट।

तालिका 2 का विश्लेषण

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा में युवाओं की भागीदारी में लगातार वृद्धि हुई है। सकल नामांकन अनुपात 2012-13 में 21.6 प्रतिशत से बढ़कर 2020-21 में 27.3 प्रतिशत हो गया। इस अवधि में महिला उच्च शिक्षा भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि दिखाई देती है। महिला GER 20.2 प्रतिशत से बढ़कर 27.9 प्रतिशत तक पहुंच गया, जो शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है।

उच्च शिक्षा में वृद्धि ने युवाओं की सोच, करियर संबंधी आकांक्षाओं और पारिवारिक निर्णयों को प्रभावित किया है। शिक्षित युवा रोजगार, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत विकास को अधिक महत्व देने लगे हैं। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा में वृद्धि ने पारिवारिक भूमिकाओं, विवाह संबंधी निर्णयों और लैंगिक संबंधों में परिवर्तन को गति दी है। इस प्रकार उच्च शिक्षा केवल आर्थिक अवसरों का माध्यम नहीं है, बल्कि यह पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक संबंधों के पुनर्गठन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

युवाओं की बदलती जीवन शैली के प्रमुख आयाम

पहला प्रमुख परिवर्तन शिक्षा और करियर की बढ़ती प्राथमिकता है। परिवारों में अब बड़ी संख्या में युवा स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं, तकनीकी प्रशिक्षण और पेशेवर पाठ्यक्रमों की ओर जाते हैं। इसके

कारण आर्थिक आत्मनिर्भरता का लक्ष्य मजबूत हुआ है। बहुत से युवा विवाह से पहले स्थायी रोजगार या करियर स्थापित करना चाहते हैं। यह सोच पारंपरिक क्रम—कम आयु में विवाह और उसके बाद पारिवारिक जिम्मेदारी—को बदलती है।

दूसरा परिवर्तन रोजगार और गतिशीलता से जुड़ा है। बेहतर शिक्षा और नौकरी के लिए युवा गाँव से शहर, छोटे शहर से महानगर या एक राज्य से दूसरे राज्य में जाते हैं। इससे एकल निवास, किराए के मकान, छात्रावास और छोटे परिवारों का अनुभव बढ़ता है। युवा दैनिक निर्णय स्वयं लेना सीखते हैं। आर्थिक स्वतंत्रता के साथ माता-पिता पर निर्भरता कम होती है, पर भावनात्मक संबंध आवश्यक रूप से कम नहीं होते। कई परिवार डिजिटल संचार से लगातार जुड़े रहते हैं।

तीसरा परिवर्तन उपभोग और अवकाश के तरीके में है। ऑनलाइन खरीदारी, भोजन वितरण, यात्रा, फिटनेस, स्ट्रीमिंग माध्यम, डिजिटल भुगतान और सोशल मीडिया युवाओं के दैनिक जीवन का हिस्सा बने हैं। पहचान का निर्माण अब केवल परिवार या स्थानीय समुदाय से नहीं, बल्कि पेशा, रुचि, मित्र समूह और ऑनलाइन नेटवर्क से भी होता है। इससे व्यक्तिगत पसंद का महत्व बढ़ता है। इसी के साथ दिखावे, तुलना और अनावश्यक खर्च का दबाव भी पैदा हो सकता है।

चौथा परिवर्तन स्वास्थ्य और निजी जीवन के प्रति बढ़ती जागरूकता है। युवा फिटनेस, मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तिगत स्थान और भावनात्मक संतुलन जैसे विषयों पर पहले की तुलना में अधिक खुलकर बात करते हैं। यह बदलाव सकारात्मक है, हालांकि देर रात तक स्क्रीन देखना, कम शारीरिक गतिविधि और असंतुलित भोजन जैसी आदतें नई स्वास्थ्य चुनौतियाँ भी पैदा करती हैं।

पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन

पारिवारिक मूल्यों में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन अधिकार और सम्मान की परिभाषा में दिखाई देता है। पारंपरिक व्यवस्था में बड़ों का सम्मान कई बार बिना प्रश्न किए उनकी बात मानने से जोड़ा जाता था। नई पीढ़ी सम्मान को देखभाल, संवाद और पारस्परिक गरिमा से जोड़ती है। युवा माता-पिता की बात सुनना चाहते हैं, लेकिन शिक्षा, करियर, मित्रता और विवाह के मामलों में अपनी राय को भी समान महत्व देते हैं। इसलिए आज परिवार में सम्मान का मूल्य समाप्त नहीं हुआ, बल्कि अधिक संवादात्मक रूप ले रहा है।

सामूहिकता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच भी नया संतुलन बन रहा है। युवा परिवार की जिम्मेदारी निभाने को तैयार हैं, परंतु वे अपनी निजी पसंद, समय और करियर के लिए जगह चाहते हैं। यदि परिवार स्वतंत्रता को अवज्ञा

मानता है तो संघर्ष बढ़ सकता है; यदि युवा स्वतंत्रता को जिम्मेदारी से अलग कर देता है तो भी रिश्ते कमजोर हो सकते हैं। स्वस्थ परिवार में दोनों पक्षों के बीच स्पष्ट अपेक्षाएँ और बातचीत आवश्यक हैं।

विवाह संबंधी मूल्य भी बदल रहे हैं। शिक्षा, रोजगार और आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण विवाह को जीवन की अनिवार्य प्रारंभिक घटना के बजाय सोच-समझकर लिया जाने वाला निर्णय माना जा रहा है। युवा साथी की शिक्षा, स्वभाव, पेशा और आपसी समझ को अधिक महत्व देते हैं। परिवार की भूमिका बनी रहती है, लेकिन अंतिम निर्णय में युवक और युवती की सहमति का महत्व बढ़ा है।

लैंगिक भूमिकाओं में बदलाव पारिवारिक मूल्यों का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षित युवतियाँ नौकरी, आर्थिक स्वतंत्रता और परिवार के निर्णयों में बराबर भागीदारी चाहती हैं। युवा पुरुषों में भी घरेलू काम, बच्चों की देखभाल और पत्नी के करियर को साझा जिम्मेदारी मानने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, हालांकि व्यवहार में समानता अभी हर परिवार में नहीं है। इस परिवर्तन से पारिवारिक सहयोग का अर्थ जिम्मेदारियों का न्यायपूर्ण वितरण भी बनता जा रहा है।

परिवार की संरचना और पीढ़ीगत संबंध

नौकरी, शिक्षा और शहरी निवास के कारण कई युवाओं का दैनिक जीवन संयुक्त परिवार से अलग होता जा रहा है। छोटे या एकल परिवार में निर्णय तेजी से लिए जा सकते हैं और पति-पत्नी को अधिक निजी स्वतंत्रता मिलती है। दूसरी ओर संयुक्त परिवार में बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की सहायता और आर्थिक संकट में सहयोग का मजबूत तंत्र होता है। इसलिए परिवार संरचना में परिवर्तन को केवल अच्छा या बुरा कहना उचित नहीं है। दोनों व्यवस्थाओं की अपनी सुविधाएँ और चुनौतियाँ हैं।

बुजुर्गों के साथ संबंधों में भी नया स्वरूप दिखाई देता है। दूर रहने वाले युवा आर्थिक सहायता, फोन, वीडियो कॉल और नियमित यात्राओं के माध्यम से संबंध बनाए रख सकते हैं। लेकिन भौतिक दूरी के कारण रोजमर्रा की देखभाल कठिन हो सकती है। आने वाले समय में बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल, स्वास्थ्य सहायता और अकेलेपन की समस्या परिवार के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न रहेगी।

सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव

बदलती जीवन शैली के सकारात्मक प्रभावों में शिक्षा, आत्मनिर्भरता, लैंगिक समानता, व्यक्तिगत गरिमा और निर्णय क्षमता का बढ़ना प्रमुख है। युवा विवाह और करियर से जुड़े निर्णय अधिक जानकारी के आधार पर लेते हैं। महिलाएँ शिक्षा और रोजगार के माध्यम से परिवार की आर्थिक तथा निर्णयात्मक संरचना में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं। डिजिटल तकनीक ने ज्ञान, सेवाओं और दूरस्थ संबंधों तक पहुँच आसान बनाई है।

नकारात्मक पक्षों में अत्यधिक डिजिटल निर्भरता, उपभोक्तावाद, पारिवारिक समय की कमी, पीढ़ीगत तनाव और बुजुर्गों की देखभाल की चुनौती शामिल हैं। नौकरी की अनिश्चितता और प्रतिस्पर्धा युवाओं पर मानसिक दबाव बढ़ा सकती है। सोशल मीडिया पर दूसरों की जीवन शैली से लगातार तुलना असंतोष पैदा कर सकती है। इसलिए आधुनिकता का लाभ तभी अधिक होगा जब उसके साथ आत्मअनुशासन, आर्थिक समझ, भावनात्मक संवाद और पारिवारिक जिम्मेदारी भी विकसित हो।

चर्चा

दस वर्षों के आँकड़े बताते हैं कि युवाओं का सामाजिक वातावरण तेजी से बदला है। इंटरनेट उपयोग में कई गुना वृद्धि और उच्च शिक्षा में बढ़ती भागीदारी ने युवा पीढ़ी को अधिक जानकारी, विकल्प और गतिशीलता दी है। ये संकेतक सीधे यह नहीं बताते कि परिवार के प्रति सम्मान बढ़ा या घटा, लेकिन वे उस सामाजिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हैं जिसमें परिवार के निर्णय, विवाह, रोजगार और संबंध बदल रहे हैं।

इस परिवर्तन को “पारिवारिक मूल्यों का पतन” कहना सरल लेकिन अधूरा निष्कर्ष होगा। आज भी परिवार भावनात्मक सुरक्षा, पहचान और सहायता का प्रमुख स्रोत है। अंतर यह है कि युवा संबंधों में समानता, सहमति और निजी चुनाव की अधिक जगह चाहते हैं। पारिवारिक मूल्य इसलिए खत्म होने के बजाय पुनर्परिभाषित हो रहे हैं। पारंपरिक आज्ञापालन की जगह संवाद, लैंगिक समानता, भावनात्मक सहयोग और व्यक्तिगत गरिमा जैसे तत्व जुड़ रहे हैं।

भारत में परिवर्तन एक समान नहीं है। ग्रामीण-शहरी अंतर, वर्ग, जाति, शिक्षा, क्षेत्र और परिवार की आर्थिक स्थिति के अनुसार युवाओं का अनुभव अलग होता है। महानगर में स्वतंत्र जीवन जीने वाले पेशेवर युवा की जीवन शैली ग्रामीण बेरोजगार युवा से भिन्न हो सकती है। डिजिटल पहुँच और उच्च शिक्षा के लाभ भी समान रूप से वितरित नहीं हैं। इसलिए किसी एक समूह के अनुभव को पूरे भारतीय युवा वर्ग पर लागू करना उचित नहीं होगा।

सुझाव

परिवारों में शिक्षा, रोजगार, विवाह और जीवन शैली से जुड़े विषयों पर आदेश की जगह नियमित संवाद होना चाहिए। युवाओं को स्वतंत्रता के साथ परिवार के प्रति जिम्मेदारी, बुजुर्गों की देखभाल और आर्थिक सहयोग का महत्व समझना चाहिए। माता-पिता को नई तकनीक और बदलते रोजगार संसार को समझने का प्रयास करना चाहिए, जबकि युवाओं को परिवार के अनुभव और सांस्कृतिक स्मृति का सम्मान करना चाहिए।

परिवार के लिए निश्चित “डिजिटल-मुक्त समय” उपयोगी हो सकता है, विशेष रूप से भोजन और महत्वपूर्ण बातचीत के समय। घरेलू काम और बच्चों की देखभाल को महिलाओं का ही दायित्व मानने के बजाय साझा

जिम्मेदारी बनाया जाना चाहिए। शिक्षा संस्थानों में जीवन कौशल, डिजिटल संतुलन, मानसिक स्वास्थ्य, लैंगिक समानता और पारिवारिक उत्तरदायित्व पर व्यावहारिक चर्चा बढ़नी चाहिए। दूर रहने वाले युवाओं को बुजुर्ग माता-पिता के स्वास्थ्य, आपातकालीन सहायता और नियमित संपर्क की स्पष्ट व्यवस्था करनी चाहिए।

निष्कर्ष

भारतीय युवाओं की जीवन शैली में पिछले दस वर्षों में स्पष्ट और तेज परिवर्तन हुआ है। डिजिटल तकनीक, उच्च शिक्षा, रोजगार की आकांक्षा, स्थान परिवर्तन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता ने उनके दैनिक जीवन तथा पारिवारिक संबंधों को नई दिशा दी है। उपलब्ध आँकड़े दिखाते हैं कि इंटरनेट उपयोग और उच्च शिक्षा में भागीदारी दोनों बढ़े हैं। इसके साथ परिवार में निर्णय लेने, विवाह, लैंगिक भूमिकाओं और पीढ़ीगत संबंधों की प्रकृति भी बदल रही है।

इन परिवर्तनों का अर्थ पारिवारिक मूल्यों का अंत नहीं है। सम्मान, सहयोग, जिम्मेदारी और भावनात्मक जुड़ाव अभी भी महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उन्हें व्यक्त करने के तरीके बदल रहे हैं। आधुनिक युवा अधिक संवाद, सहमति, समानता और निजी चुनाव चाहता है। भविष्य का भारतीय परिवार संभवतः परंपरा और आधुनिकता के मिश्रित रूप में विकसित होगा। उसकी स्थिरता इस बात पर निर्भर करेगी कि परिवार स्वतंत्रता और जिम्मेदारी, तकनीक और मानवीय संवाद, तथा व्यक्तिगत आकांक्षा और सामूहिक सहयोग के बीच कितना संतुलन बना पाता है।

संदर्भ सूची

1. भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त। (2011)। भारत की जनगणना 2011: सामाजिक एवं सांस्कृतिक आँकड़े। नई दिल्ली: भारत सरकार।
2. सिंह, योगेन्द्र। (2011)। भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण। जयपुर: रावत प्रकाशन।
3. आहूजा, राम। (2012)। भारतीय सामाजिक व्यवस्था। जयपुर: रावत प्रकाशन।
4. भारत सरकार, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय। (2014)। राष्ट्रीय युवा नीति 2014। नई दिल्ली: भारत सरकार।
5. भारत सरकार, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय। (2014)। युवा भारत: सामाजिक एवं आर्थिक संकेतक रिपोर्ट। नई दिल्ली: राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय।

6. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2016)। उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) 2015-16 रिपोर्ट। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
7. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2018)। उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) 2017-18 रिपोर्ट। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
8. भारत सरकार, नीति आयोग। (2018)। समग्र विकास के लिए रणनीति: भारत@75। नई दिल्ली: नीति आयोग।
9. अंतरराष्ट्रीय दूरसंचार संघ। (2018)। विश्व दूरसंचार/आईसीटी संकेतक डेटाबेस। जिनेवा: अंतरराष्ट्रीय दूरसंचार संघ।
10. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2019)। उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) 2018-19 रिपोर्ट। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
11. विश्व बैंक। (2020)। विश्व विकास संकेतक: भारत में इंटरनेट उपयोग और डिजिटल विकास संकेतक। वाशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक।
12. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) 2019-20 रिपोर्ट। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
13. भारत सरकार, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय। (2020)। भारत में समय उपयोग सर्वेक्षण 2019। नई दिल्ली: राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय।
14. भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय। (2021)। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (NFHS-5): भारत तथ्य-पत्र। नई दिल्ली: स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय।
15. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2021)। उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) 2020-21 रिपोर्ट। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।